मक्का

उत्तम किस्में

मक्का की संकर गंगा सफेद 2, डक्कन 103, संकुल किस्में विजय, नवजोत, माही धवल, माही कंचंन का 20–25 किलो प्रति हैक्टेयर प्रमाणित बीज बोयें। जल्दी पकने वाली किस्मों में बीज की मात्रा 30 से 35 किलो काम में लेवें।

बीजोपचार

बीज को रिडोमिल एम जेड या एप्रोन 35 एस डी से 4 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। इसके बाद एजोटोबेक्टर एवं पी एस बी कल्चर से उपचारित कर बोये।

बुवाई

बुवाई जून के अन्त से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक करें। सिंचित क्षेत्रों में 15–30 जून तक बुवाई कर देवें। अगेती फसल लेना ज्यादा उपयुक्त रहता है। कतार से कतार की दूरी 60 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 सेन्टीमीटर रखें। पौधों की संख्या प्रति वर्ग मीटर 6 से 7 होनी चाहिये। जुलाई के प्रथम सप्ताह तक वर्षा न हो तो पहले से तैयार खेत में वर्षा होने की सूचना प्राप्त होने पर वार्ा आने से 2–3 दिन पूर्व सूखी बुवाई करना लाभदायक पाया गया हैं।

खाद एवम उर्वरक

मिट्टी परीक्षण परिणाम अनुसार उर्वरक देवें। इसके अभाव में सिंचित फसल में बुवाई से पूर्व 66 किलो उत्तम डी. ए. पी. एवं 40 किलो उत्तमवीर यूरिया या 66 किलो उत्तमवीर यूरिया एवं 190 किलो उत्तम सुपरफास्फेट प्रति हैक्टेयर उरकर देवें। बुवाई के 30 दिन बाद 66 किलो उत्तमवीर यूरिया तथा मांजरे निकलने से पूर्व 66 किलो उत्तमवीर यूरिया मिट्टी में मिलाकर जड़ों पर मिट्टी चढ़ा देवें।

असिंचित क्षेत्र में 30 किलो उत्तमवीर यूरिया एवं 66 किलो उत्तम डी.ए.पी. या 190 किलो उत्तम सुपरफासफेट एवं 55 किलो उत्तमवीर यूरिया प्रति हैक्टेयर बुवाई के समय कर देवें। 55 किलो उत्तमवीर यूरिया मांजरे निकलने के पूर्व वर्षा को ध्यान में रखते हुए मिट्टी में मिला कर जड़ों पर मिट्टी चढावें।

जस्ते की कमी हो तो 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर बुवाई के समय उर्वरक के साथ डालें।

यूरिया की उपयोग क्षमता बढाने के लिये यूरिया के दानों पर 25 ग्राम नीमसार (निमिन) प्रति किलो यूरिया की दर से परत चढ़ाकर उपयोग करें।

सामान्य दशा में निम्नलिखित मात्रा में उर्वरक प्रयोग करें।

पोषक तत्व	पोषक तत्व की मात्रा (किग्रा/हे.)	उर्वरक की मात्रा (किग्रा/हे.)
नाइट्रोजन	30	40 (यूरिया)
फास्फोरस	30	66 (एस.एस.पी.)
प्पोटाश	–	–

अन्तर्शस्य
मक्का की एक कतार के बाद सोयाबीन की एक कतार की बुवाई 30 सेन्टीमीटर की दूरी पर करें। मक्का की दो कतारों के बाद उड़द की दो कतार भी बोयी जा सकती है।

निराई–गुड़ाई व सिंचाई

पौधों की बढवार के समय और फूल आते समय सिंचाई अवश्य करें। मक्का की फसल में शुरू के 20–30 दिन तक खरपतवार निकालते रहें।

तना छेदक
बुवाई के 15–30 दिन के अन्दर फोरेट 10% कण या कारबोफ्यूरान 3% कण 7–8 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से पौधों के पौटों में डालें अथवा एण्डोवीर 35 ई सी सवा लीटर प्रति हैक्टेयर की दर स छिड़कें।

फड़का व सैन्य कीट
प्रकोप होने पर मिथाइल पैराथियॉन 2% या कारबोरिल 5% चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टेयर भुरकें।

तुलासिता
जून की पहली वर्षा आते ही, एवं सिंचित क्षेत्रों 15–20 जून के मध्य तक इसकी बुवाई अवश्य करें। 10–15% बीज अधिक बोये। 4 ग्राम रिडोमिल एम जेड या एप्रोन 35 एस डी से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बोयें। रोगग्रस्त पौधों को नष्ट करें।

दाने बनते समय खेत की परिधी से एक मीटर अन्दर तक लगे भुट्टों को पत्तियों से लपेट देवें तथा प्रकाश परावर्तित करने वाले फीते का प्रयोग करें। केवल प्रकाश परावर्तित करने वाले फीते का प्रयोग करने से भी तोतों से नुकसान कम हो जाता है। फीते से फीते की दूरी 5 मीटर रखें।